सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2024 का चतुर्थ अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। यह अंक विक्रम नवसंवत्सर 2081 विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। जिसमें नवसंवत्सर, नवरात्रा, रामनवमी एवं राजस्थान के सांस्कृतिक संस्कृति को प्रकाशित किया गया है। जो अध्येताओं के लिये निश्चित रूप से रूचिकर रहेगा। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित **'पंचतत्त्व की विवेचना : जलतत्त्व'** नामक शोधलेख में पंचतत्वों में जल की महत्ता को बताया गया है। तत्पश्चात् सुनील कुमार शर्मा द्वारा संकलित **'श्री रामनवमी'** लेख में भगवान् राम के जन्म महोत्सव पर आध्यात्मिक व सांस्कृतिक पक्ष को उजागर किया गया है। इसी क्रम में पं. आलोक शर्मा द्वारा लिखित **'श्रीरामनवमी व्रत की महिमा'** लेख में रामनवमी व्रत के विधान का वर्णन किया गया है। तत्पश्चात् डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा संकलित **'नवसंवत्सर का प्रारम्भ'** लेख में नववर्ष के मांगलिक कार्यो का वर्णन किया गया है। साथ ही डॉ. मनीषा शर्मा द्वारा संकलित **'राजस्थान का अनूठा महोत्सव - गणगौर'** नामक लेख में राजस्थान में गणगौर का स्वरूप व महत्त्व बताया गया है। तत्पश्चात् जयप्रकाश शर्मा द्वारा लिखित **'डॉ. प्रभाकर शर्मा शास्त्री'** लेख में प्रभाकर शास्त्री के जीवनवृत का उल्लेख किया है। अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के **'राष्ट्रोपनिषत्'** के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा